चित्र और संभूति मुनि

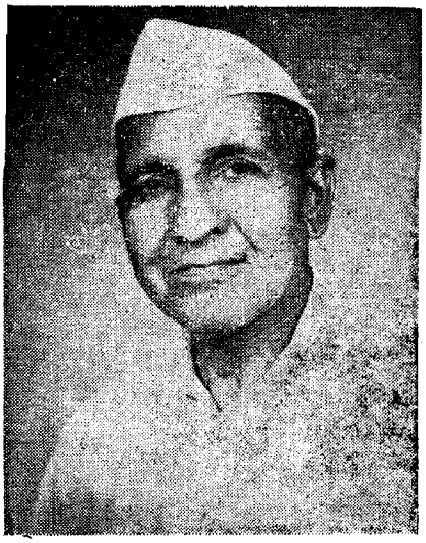

राजमल लोढ़ा

दो भाई जो कि दोनों एक-दूसरे से अति सुन्दर सूरत, शकल से मिलते-जुलते, कद में एक समान, वाणी जिनकी बहुत मृदु, सरल, और मनभावन है । हस्तिनापुर के बीच चौक में जनता का जमाव इनके चारों तरफ जम रहा है, भीड़ भी जम रही है। इनके सुमधुर गीत के झंकार से सब लोग अपना कार्य छोड़-छोड़ के यहां एकत्रित हो गये हैं । एक भाई मानो वीणा का स्वरूप ही है तब दूसरा वीणा के स्वर स्वरूप है ।

इस स्थान पर कई गवैयों के पहले रोचक सुमधुर गीत हुए हैं किन्तु इसकी वाणी में जो मिठास व हृदयग्राहीपना है उसने पिछले सब गवैयों को पीछे छोड़ दिया है । पुरुष, महिलाएं, बालक-बालिकाएं सब इनकी ओर उमड़ पड़े हैं सबको मंत्रमुग्ध बना दिया है ।

यह समाचार राजदरबार और मंत्री तक पहुंचे । इनकी गीत कला की स्वर लहरी हस्तिनापुर के घर-घर में पहुंच गई, जनता ने इनका बड़ा आदर सत्कार किया । संगीत की माधुरी के साथ इनके स्वभाव की मधुरता ने जनहृदय में गहरी छाप जमा दी ।

प्रतिदिन इनके अलग-अलग स्थानों पर कार्यक्रम योजित किये गये । एक दिन ऐसा भी आया कि हस्तिनापुर के महाराजा के सामने इनकी स्वर गंगा बही, महाराजा इनके सुमधुर गीतों को सुनकर मंत्र मुग्ध बन गये । इस दिन मंत्री बाहर गये हुए थे । राजदरबार में इनकी वाणी के झंकार ने सबको चमत्कृत कर दिया और यह निश्चय किया गया कि मंत्री के बाहर से आने के बाद एक वक्त पुनः महाराजा के सामने इस कार्यक्रम का आयोजन अच्छे रूप में दिया जाय ।

दो चार दिन बाद मंत्री जब बाहर से आये तब महाराजा ने इस कार्यक्रम को पुनः जमाने का आदेश दिया क्योंकि उस दिन की स्वर लहरी ने महाराजा के हृदय में अपना स्थान बना लिया था ।

कार्यक्रम का दिन निश्चित किया गया, हजारों जनता की मेदिनी उपस्थित थी । महाराजा, मंत्री, कर्मचारी भी अपने-अपने स्थानों पर बैठे हुए थे कि दोनों भाई अपनी वीणा लेकर राज-दरबार में उपस्थित हो गये । उन्होंने अपना भजन कीर्तन शुरू किया जिसको सुनकर सब मुग्ध बन गये । मंत्री उन दोनों को बार-बार घूर-घूर कर देख रहा था वह एक टक लगाये से था और सोच रहा था कि ये कौन हो सकते हैं ? थोड़ी देर में उसने उनको पहिचान लिया कि ये दोनों चित्र और संभूति चाण्डाल के पुत्र हैं । मंत्री ने महाराजा से कहा कि ये चाण्डाल के बेटे हैं जल्दी ही जनता के कानों तक यह समाचार पहुंच गये । नगर निवासियों ने जान लिया कि ये दोनों कुमार कुलीन वंश के नहीं है एक चाण्डाल के लड़के हैं तो सबकी नजरों में गिर गये । जनता का प्रेम समुद्र की लहरों की तरह होता है एक समय मानव मेदिनी जिसके चरण धोती है वही किसी समय उसको घृणा की दृष्टि से देखने लगती है और किनारे के एक तरफ फेंक देती है ।

जब पता चला कि चित्र और संभूति दोनों चाण्डाल हैं तो उनको मंत्री ने धुत्कार कर नगर से बाहर निकाल दिया । हस्तिनापुर की जनता मानो पाप का प्रायश्चित करती हो इस प्रकार इन दोनों भाइयों के सिर पर सितम की झड़ी लग गई । चाण्डाल के घर जन्म लेना यह उस जमाने में एक अक्षम्य अपराध माना जाता था ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र और संभूति चाहे कितने ही सुशील और मधुर हों चाहे उनका स्वर कितना ही हृदयग्राही और आनन्दमयी क्यों न हो उनके सिर पर चाण्डाल के घर पर जन्म लेना उस समय मानव रूप में भी उनको मानने के लिये युग तैयार नहीं था। वे पशु से भी गये बीते माने जायेंगे, उनसे हर प्रकार का परहेज किया जाता था। यदि उनका जन्म किसी ब्राह्मण, क्षत्रिय या वेश्य कुल में हुवा होता तो वे एक महाराजा से बढ़कर हमेशा के लिये जनता के स्नेह-श्रद्धा के भाजन बन जाते, यह अपराध एक ऐसा माना जाता कि कोई भी कुलीन इसे माफ नहीं करता।

चित्र और संभूति को हस्तिनापुर से निकालने और धुत्कारने का सबसे पहला काम महाराजा के मंत्री नमूची ने किया। यदि नमूची ने यह रहस्य नहीं खोला होता तो चित्र और संभूति आदर प्राप्त करके जैसे आये थे वैसे वापिस चले जाते। उनके, सिर पर यह महान दुःख का पहाड़ नहीं आ पड़ता। किसी को भी यह शंका नहीं होती कि ऐसे उगते फूल जैसे कुमार चाण्डाल के कुल में पैदा हुए हैं।

नमूची ने यह रहस्य क्यों खोला ? नमूची तो हस्तिनापुर महाराजा का मंत्री था, उसको इन सुकुमार बालकों से क्या वेर था ?

कुलीन कुल में भी चाण्डाल पैदा होते हैं। यह नमूची बुद्धिमान था कुलवान था किन्तु चारित्र से अतिशिथिल व भ्रष्ट मनुष्य था। यह काशी के महाराजा के यहां विश्वासपात्र था जब उसके काले कारनामों का पता काशी महाराजा को लगा तो उन्होंने उसको जल्लाद के सुपुर्द कर दिया और कहा कि मैं इसका मुंह नहीं देखना चाहता हूं तुम इसे जगत में ले जाओ और इसका काम तमाम कर दो।

जल्लाद को इसके ऊपर दया आई और वह नमूची को अपने घर लाया और राजा से छिपाकर कितने ही दिन अपने घर में रक्खा। जिस जल्लाद ने इसको आश्रय दिया उसने उसके साथ भी अवांछनीय बर्ताव किया इससे जल्लाद को भी क्रोध आ गया और उसने भी अपने दो पुत्रों को आज्ञा दी कि इसको दूर जंगल में ले जाकर इसका शिरच्छेद कर दो।

दोनों पुत्र पिता की आज्ञा मानकर नमूची को लेकर जंगल में गये परन्तु विचार करने लगे कि यह नमूची हमारे घर में अतिथि रूप में रहा। इसने हमको विद्यादान दिया हमारे, साथ प्रेम का बर्ताव किया, अब हम इसका वध कैसे करें। उनका हाथ थम गया और दोनों भाई गहन विचार में पड़ गये व दोनों आपस में विचार करने लगे कि एक तरफ पिता की आज्ञा है और दूसरी ओर विद्यादान करने वाला गुरु है, हमें किस ओर अपना कदम बढ़ाना चाहिये, अन्त में उन्होंने नमूची को छोड़ दिया।

नमूची वहाँ से रवाना हुआ और अपने बुद्धिबल से हस्तिनापुर महाराज का मंत्री बन गया, इसी मंत्री नमूची ने इन दोनों भाइयों के चाण्डाल होने का रहस्य खोला और अपमान कर नगर से बाहर निकाला।

दोनों भाई चाण्डाल कुल में जन्म लेते हुए भी संसार जिसको खानदानी कहता है वह इन दोनों भाइयों के खून में पाई जाती है। इसी से पिता की आज्ञा का उल्लंघन करके नमूची को जीवन दान दे दिया था। दोनों भाई इस भय से अपने घर न जाकर अज्ञातवास में चले गये। नमूची के कारण ही अपने माता-पिता की शीतल छाया को तिलांजलि दी। नमूची को बचाने के लिये गाँव-गाँव शहर-शहर भटकता भिक्षा के टुकड़ों पर जीवन यापन करना स्वीकार किया।

यदि नमूची में थोड़ा भी खानदानी का अंश होता या कृतज्ञता होती तो वह कभी भी इन दो भाइयों को हेय स्थिति में उतारने की हिम्मत नहीं करता। चित्र और संभूती का तो इसके ऊपर इतना उपकार था कि यदि यह अपनी चमड़ी के जूते बनाकर इनको पहिनाता तो भी इसको आनन्द प्राप्त होता।

हस्तिनापुर की तमाम जनता के एक दिन प्रिय और श्रद्धालु बने हुए दोनों भाई नमूची के कारण लोकनिंदित घृणित बन गये। यहां तक कि कोई उन्हें एक समय रोटी तक खिलाने को तैयार नहीं। चित्र और संभूति दोनों निराश होकर हस्तिनापुर से निकलकर जंगल की ओर चल पड़े। दोनों भाई जंगल में बैठकर विचार करते हैं कि किसी भी बस्ती में अब अपने को आश्रय नहीं मिल सकता है, यदि कहीं स्थान मिल जाय और कुल की बात मालूम हो जाय तो पूरी जनता के कोप भाजन बन जायें जब इसमें कोई संशय नहीं है ऐसी स्थिति में अब अपने को कहां जाना, किसका आश्रय लेना, संपूर्ण विश्व के घोर अंधकार में अपने को डूबते हुए दोनों भाइयों ने देखा।

विचार विमग्न हो गये, अपने आपको कोसने लगे और इस घनघोर जंगल में हमेशा के लिये जीवन का अन्त करने में ही अपने आपको सुखी मानने लगे। जीवन का अन्त किस प्रकार किया जाय इसका उपाय सोच ही रहे थे कि एक घनघोर झाड़ी में एक तपस्वी मुनि को ध्यान करते हुए देखा। दोनों भाई तपस्वी शांत चित्त मुनि की ओर आगे बढ़े। मुनि के मुख मण्डल की तेजस्वता के दर्शन करते ही दोनों भाइयों के मुख पर वैसी ही प्रफुल्लता बह गई।

मुनिराज के पास पहुंचते ही जब उनके मस्तिष्क में यह बात आई कि हम चाण्डाल के पुत्र हैं, संसार में कहीं भी अच्छी जगह हमारा स्थान नहीं है उनके मुख मण्डल पर दीनता व मलिनता छा गई। दोनों भाई आपस में एक दूसरे का मुंह देखने लगे। मुनिराज का ध्यान पूरा हुआ, उन्होंने दोनों कोमल जिज्ञासु नवयुवकों को देखा और कहा कि महानुभाव ! निर्भय रहो, हमारे यहां किसी का कोई ऊंच-नीच का भेद नहीं है। यहां आने का, पूछने का, वार्तालाप करने का कोई भेद-भाव नहीं तुमको चर्चा करने का पूर्ण अधिकार है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपस्वी ध्यानी तो अपनी आत्म-शुद्धि में निमग्न रहते हैं, उनके सामने चाण्डाल या व्याधि की उपस्थिति कोई विघ्न करने वाली नहीं होती है। उस समय दोनों भाई अपने अन्तरंग में सोचते हैं कि इन महात्मा की वाणी बड़ी मीठी है। सबका कल्याण करने वाली है किन्तु जब इनको यह जानकारी मिलेगी कि हम दोनों चाण्डाल हैं, अस्पृश्य हैं, नीच कुल की सन्तान हैं, तो इनकी त्योरियां चढ़ जायगी, क्रोध की अग्नि ज्वाला प्रज्वलित हो जायगी। हमको तिरस्कृत कर देंगे इस प्रकार सोचते-सोचते कुछ संकोचकर हिम्मत करके एक भाई ने बड़े ही धीमे स्वर से बोला:—

स्वामी नाथ ! हम चाण्डाल के पुत्र हैं हम आपकी शरण में कैसे आ सकते हैं ?

यह सुनते ही मुनिराज बड़ी ही गंभीर आकृति बनाकर मीठे शब्दों में बोले—क्या चाण्डाल मनुष्य नहीं होता है, क्या कुलीन जैसे—मिट्टी से इनका निर्माण नहीं हुआ है तथा इनको अपना आत्म कल्याण करने का अधिकार नहीं है, परमात्मा के नाम से ये कैसे वंचित रह सकते हैं, आओ यहां मेरे पास आओ और अपनी इस बात को भूल जाओतुम मेरे समान मनुष्य हो।

ऐसे मीठे वचन सुनकर मन में संकोच होते हुए भी दोनों भाई मुनिराज के पास आकर बैठ गये और सोचने लगे, यह मानव इस लोक का प्राणी नहीं हो सकता, सचमुच यह तो देवताओं के संघ में से कोई मानव आकर यहां बैठ गया है ।

चित्र और संभूति दोनों ने अपनी आत्मकथा मुनिराज को सुनाई, मुनिराज ने बड़े ही ध्यान से उनकी कथनी को सुना। कुशल वैद्य की तरह चित्र और संभूति को सान्त्वना प्रदान की, संसार के असंख्य दुःख-दर्द और भव-भव के बन्धनों से छुटकारा पाने का राजमार्ग बताया।

संसार और संसारियों के अनेक उपद्रव सहन करते हुए आत्मा को उच्च श्रेणी पर आरूढ करने का सद्भाग्य कोई विरले प्राणी को ही मिल सकता है। तुमको भाग्य से यह सुअवसर प्राप्त हुवा है। इसको हाथ से न जाने दो, अनन्तकाल के हिसाब से यह दुःख और यह क्षणिक जीवन किस गिनती में है। वीरता से इस दुःख और कष्ट का सामना करो, इस प्रकार संसार के सुख-दुःख को भी अपने दासानुदास जैसे बना दो।

चित्र और संभूति दोनों भाइयों को तपस्वी मुनिराज का यह उपदेश बहुत रुचिकर हुवा और उन्होंने उनके चरणों में अपना शीश नमाकर उद्धार करने की प्रार्थना की। मुनिराज ने उनको भगवती दीक्षा देकर उनका चाण्डालपने का मेल धो डाला। दोनों भाइयों ने अपनी इसी देह से पुनर्जन्म ले लिया।

अब दोनों मुनिराज निर्भय रूप से तप चर्या करते हैं कहीं क्रोध, मान, माया लोभ की कलुषित हवा आत्मा को न लग जाय इसलिये जगत की घनघोर झाड़ियों में, गिरी कन्दराओं में रात-दिन आत्म साधना करते हैं मास क्षमण की तपस्या करते हैं। महीने में एक समय नगर में आहार की आशा से आते हैं तमाम चिन्ता फिक्र छोड़ दी है आत्म नन्दी बन गये हैं ।

एक दिन मास क्षमण के मुनि संभूति आहार लेने के लिये हस्तिनापुर नगर में जा रहे हैं, उनके मुख से तपश्चर्यों की कांति झलक रही है जो भी इनको देखता वह नत मस्तक हो जाता है, नीची दृष्टि करके मुनिराज जा रहे हैं कि सामने से नमूची मंत्री आ रहा है, उसने संभूति मुनि को देखा और पहिचान लिया, उसी समय विचार किया ओहो यही वह चाण्डाल है जो मुनि का वेश धारण करके जनता को अपने चंगुल में फंसाना चाहता है संसार के मनुष्यों को धोखा देना चाहता है, लूटना चाहता है, पीछे से आकर मुनि का गला पकड़ा और कहने लगा साधु का वेश पहिन कर लोगों के साथ ठगी करता है, चला जा यहां से, ऐसे आक्रोश के वचन कहकर एक जोर का धक्का मारा, संभूति मुनि गिरते-गिरते बच गये।

उन्होंने अपने सामने नमूची को देखा, देखते ही उनकी आंखें लाल हो गई क्योंकि क्रोध और तप का बहुत पुराना सम्बन्ध है। तपस्वियों की आंखों में जब ज्वाला निकलती है तो इस ज्वाला ने क्या-क्या अनर्थ नहीं किये है, लम्बी तपश्चर्या के प्रभाव से संभूति मुनि को गुप्त शक्ति प्राप्त हो गई है वे नमूची के इस व्यवहार को सहन नहीं कर सके उन्होंने नमूची पर तेजी से तेश्या छोड़ी। नमूची जलने लगा इतना ही नहीं पूरे हस्तिनापुर में आग की ज्वालाएं धधकने लगी ऐसा आभास होने लगा। महाराजा के महल में जब ये समाचार पहुंचे तो सनत्कुमार चक्रवर्ती वहां दोड़े आये और हाथ जोड़कर तपस्वी मुनि से विनती करने लगे। महाराज आप तो ज्ञानी हैं, ध्यानी हैं, हमारे अपराधों को क्षमा करो।

इतने ही में चित्र मुनि वहां आ पहुंचे, उन्होंने संभूति मुनि की क्रोध ज्वाला के ऊपर शांत सुधारस के अमीका सिंचन किया, सबको शांत किया। नमूची भी अपने किये हुए का प्रायश्चित करने लगा और संभूति मुनि के चरणों में गिरकर अपने दुष्कृत्यों की क्षमा याचना करने लगा। चित्र मुनि ने सबको शांत किया और सब जगह सुखमय वातावरण फैल गया।

चित्र और संभूति मुनि जंगल में लौट गये और प्रतिदिन के कार्यक्रम में संलग्न हो गये। संभूति मुनि की आंखों के सामने नमूची का वही गला पकड़ने का दृश्य बार-बार घूमने लगा, उस दृश्य को वे भूलना चाहते हैं किन्तु भूला नहीं जाता है। मुनि अपने साधना मार्ग से ऐसे गिरे कि पुनः ऊपर नहीं उठ सके। पतन की भी परम्परा होती है इसलिये साधक मामूली रखपन से भी अपने आपको बहुत संभाल कर चलते हैं। साधना की सीढ़ी इतनी ही कोमल और चिकनी होती है कि एक वक्त फिसलने के बाद संभलना बहुत मुश्किल होता है और धीरे-धीरे नीचे ही आकर खड़ा हो जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्र मुनि ने संभूति को बहुत समझाया और कहा कि किये हुए पाप की आलोयणा लेकर एक समय फिर निर्मल हो जाओ, परन्तु प्राप्त की हुई लब्धि का मुनि को नशा चढ़ा गया है जिससे संभूति मुनि को चित्र मुनि की सलाह ने कोई असर नहीं किया।

दोनों मुनि आचार और व्रत का पालन एक समान करते हैं किन्तु दोनों की अन्तर दृष्टि अलग-अलग है। बाहर से दोनों एक पथ के पथिक दिखाई देते हैं परन्तु इनका दृष्टिकोण बदल गया है एक लोकोत्तर सुख प्राप्ति के नियम से तमाम व्रतों का आचरण करता है तो दूसरा लौकिक सुख की कामना से संयम के कष्ट सहन करता है।

जिस प्रकार दबी हुई अग्नि किसी भी दिन अपना स्वरूप प्रकट करती है उसी प्रकार संभूति के उपर वासनाओं ने अपना आधिपत्य जमाना शुरू किया। कुछ समय पश्चात् हजारों नागरिकों के साथ सनत्कुमार चक्रवर्ती अपनी सबसे सुन्दर रानी सुनन्दा सहित मुनि श्री संभूति के दर्शन वंदन करने आये।

संभूति मुनि जब रानी सुनन्दा को सुन्दर वस्त्रों सहित सुगंधित द्रव्यों से युक्त आंख में काजल, मस्तक पर लाल तिलक को देखा तो उनका संयम का किला उस दिन से धीरे-धीरे ढहने लगा। सुनन्दा ने मुनि का वंदन किया उस समय उसके बालों का सहज उनके चरणों में स्पर्श हो गया। इससे मुनि के जीवन का मन्थन करके बुद्धि का जो संचय किया था उसका भी उल्लंघन हो गया। वासना ने उग्ररूप धारण कर लिया और संभूति मुनि के पैर के नीचे की जमीन खिसक गई। उसी समय उन्होंने अपने मन में निश्चय किया कि यदि मेरे तप का प्रभाव हो तो मुझे इस भव में नहीं तो परभव में भी सुनन्दा जैसी स्त्री प्राप्त हो।

इधर चित्र मुनि को जब इस बात की जानकारी हुई तो उनका हृदय द्रवित हो गया और उन्होंने संभूति मुनि को बहुत समझाया की एक कांच के टुकड़े के लिये दुर्लभ तपश्चर्या का संयम रूप भण्डार क्यों लूटा देते हो। तुमने किस उच्च आशय से संयम मार्ग ग्रहण किया, किस आदर्श से आज तक संयम का पालन किया, तपश्चर्या से इन्द्रियों का निग्रह किया, अपने आप पर विजय प्राप्त की, अब पुनः आत्मा बुद्धि की ओर कदम बढ़ाओ, अपने आप पर विजय प्राप्त करो। संभूति मुनि के ऊपर चित्र मुनि के उपदेश का कोई असर नहीं हुवा और उन्होंने जो निश्चय किया उस पर अडिग रहे। मनुष्य के जिस समय जिस कर्म का उदय होता है उस समय उसकी बुद्धि भी वैसी ही हो जाती है और वह काम भी वैसा ही करने लग जाता है इसमें विजय प्राप्त करने वाले दुर्लभ प्राणी ही होते हैं।

इस निश्चय के परिणाम से संभूति मुनि दूसरे भव में काम्पिल्यपुर नगर में ब्रह्मदत्त नामक बारहवें चक्रवर्ती हुए। चित्र मुनि केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष में गये।

दोनों भाइयों ने एक ही आशय से संयम अंगीकार किया, एक ही गुरु के उपदेश से मुनि दीक्षा अंगीकार की, दोनों ने समान रूप से तपश्चर्या की किन्तु उसका फल मनोभावना अलग-अलग होने से जुदाजुदा प्राप्त किया। संभूति मुनि दुर्लभ बोधि भावना के कारण अलग रास्ते चले गये और चित्र मुनि सुलभ बोधि भावना के कारण मोक्ष में चले गये।

वन्दन हो चित्र मुनि की भावना को।

□

अपनी मति को सदैव वैराग्य-रस में ओत-प्रोत रखो, जिससे जन्म-मरण सम्बन्धी दुःख मिटता जाए और आत्मा सुखमय बनती जाए।

मिथ्यात्वी काले नाग से भी भयंकर है। काले नाग का जहर तो मन्त्र या औषधि द्वारा उतारा जा सकता है, किन्तु मिथ्यात्व-ग्रसित व्यक्ति की वासना कभी अलग नहीं की जा सकती।

—राजेन्द्र सूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org